



कृत्रिम बुद्धिमत्ता और युवाओं की रोजगार आकांक्षाओं में परिवर्तन: अम्बेडकरनगर जिले के युवाओं का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

विजय कुमार गुप्ता

सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग, बी. एन. के. बी. पी. जी. कॉलेज, अम्बेडकरनगर, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence Author: विजय कुमार गुप्ता

Received 16 March 2026; Accepted 17 Apr 2026; Published 5 May 2026

DOI: <https://doi.org/10.64171/JSRD.5.2.88-92>

सारांश

वर्तमान समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता केवल तकनीकी क्षेत्र तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि शिक्षा, बैंकिंग, स्वास्थ्य, व्यापार, प्रशासन, संचार तथा रोजगार जैसे सामाजिक जीवन के अनेक क्षेत्रों को प्रभावित कर रही है। विशेष रूप से युवाओं के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता रोजगार के नए अवसरों के साथ-साथ रोजगार की सुरक्षा, आवश्यक कौशल तथा भविष्य के पेशागत विकल्पों से जुड़े नए प्रश्न भी उत्पन्न कर रही है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य अम्बेडकरनगर जिले के युवाओं में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रति जागरूकता, इसके संभावित रोजगार प्रभाव तथा रोजगार संबंधी आकांक्षाओं में हो रहे परिवर्तनों को समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से समझना है।

अध्ययन के लिए अम्बेडकरनगर जिले के 50 युवाओं को उद्देश्यपूर्ण एवं सुविधानुसार नमूना चयन के माध्यम से शामिल किया गया। प्राथमिक सूचनाएँ प्रश्नावली एवं प्रत्यक्ष बातचीत के माध्यम से प्राप्त की गईं। अध्ययन में 18 उत्तरदाता ग्रामीण तथा 32 उत्तरदाता शहरी अथवा अर्ध-शहरी क्षेत्र से संबंधित थे। आयु की दृष्टि से 20-25 वर्ष के 24, 26-30 वर्ष के 15 तथा 31-35 वर्ष के 11 उत्तरदाता शामिल थे।

अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि युवा कृत्रिम बुद्धिमत्ता को केवल रोजगार समाप्त करने वाली तकनीक के रूप में नहीं देखते, बल्कि इसके माध्यम से नए रोजगार अवसर उत्पन्न होने की संभावना भी स्वीकार करते हैं। लगभग 68 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मत था कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता नए रोजगार अवसर पैदा कर सकती है। दूसरी ओर लगभग 70 प्रतिशत युवाओं ने रोजगार की सुरक्षा को लेकर चिंता व्यक्त की। लगभग 74 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि भविष्य के रोजगार के लिए नए कौशल सीखना आवश्यक होगा। रोजगार की प्राथमिकता में सरकारी नौकरी सबसे ऊपर रही, जिसे 22 उत्तरदाताओं ने चुना। इसके बाद निजी क्षेत्र, स्वरोजगार अथवा व्यवसाय तथा डिजिटल अथवा ऑनलाइन कार्य जैसे विकल्प सामने आए।

अध्ययन से यह भी पता चलता है कि कम आयु के युवा कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रति अपेक्षाकृत अधिक सकारात्मक दिखाई देते हैं तथा शहरी एवं अर्ध-शहरी युवाओं में इसके प्रति जागरूकता और उपयोग ग्रामीण युवाओं की अपेक्षा अधिक है। इस प्रकार कृत्रिम बुद्धिमत्ता युवाओं की रोजगार आकांक्षाओं में अवसर और असुरक्षा दोनों को एक साथ प्रभावित कर रही है।

मूलशब्द: कृत्रिम बुद्धिमत्ता, युवा, रोजगार आकांक्षा, रोजगार सुरक्षा, कौशल, तकनीकी परिवर्तन, अम्बेडकरनगर।

1. प्रस्तावना

समाज में तकनीकी परिवर्तन सदैव सामाजिक संरचना, आर्थिक गतिविधियों और मानव संबंधों को प्रभावित करते रहे हैं। औद्योगिक क्रांति ने उत्पादन एवं श्रम के स्वरूप में परिवर्तन किया, जबकि सूचना एवं संचार तकनीक ने कार्यस्थल, शिक्षा तथा संचार के तरीकों को बदल दिया। वर्तमान समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता इसी परिवर्तन की एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में सामने आई है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ऐसी तकनीकी प्रणालियों को संदर्भित करती है जिनके माध्यम से मशीनें ऐसी गतिविधियाँ कर सकती हैं जिनमें सामान्यतः मानवीय बौद्धिक क्षमता की आवश्यकता होती है। इनमें सूचना का विश्लेषण, भाषा को समझना, समस्या समाधान, निर्णय में सहायता, सामग्री निर्माण तथा पूर्वानुमान जैसी गतिविधियाँ शामिल हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विस्तार ने रोजगार को लेकर दो प्रकार की धारणाएँ पैदा की हैं। पहली धारणा के अनुसार मशीनों द्वारा अनेक कार्य किए जाने से कुछ पारंपरिक रोजगारों की आवश्यकता कम हो सकती है। दूसरी धारणा यह है कि नई तकनीक नए प्रकार के कार्य, व्यवसाय और रोजगार भी पैदा करती है। इसलिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता को केवल रोजगार समाप्त करने या केवल रोजगार पैदा करने वाली शक्ति के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है।

युवाओं के संदर्भ में यह प्रश्न अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि युवा शिक्षा पूरी करने के बाद रोजगार बाजार में प्रवेश करने वाले प्रमुख सामाजिक समूह हैं। उनकी रोजगार आकांक्षाएँ केवल व्यक्तिगत पसंद का परिणाम नहीं होतीं, बल्कि परिवार, शिक्षा, आर्थिक स्थिति, सामाजिक प्रतिष्ठा, स्थानीय रोजगार अवसर तथा बदलती तकनीक से भी प्रभावित होती हैं।

अम्बेडकरनगर जैसे जिले में यह प्रश्न विशेष महत्व रखता है। जिले के युवाओं के सामने सरकारी नौकरी, निजी रोजगार, स्वरोजगार, व्यवसाय, पारंपरिक स्थानीय व्यवसाय तथा तेजी से बढ़ते डिजिटल कार्यों के विकल्प मौजूद हैं। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में तकनीकी संसाधनों तथा डिजिटल संपर्क की असमानता भी युवाओं की आकांक्षाओं को अलग-अलग ढंग से प्रभावित कर सकती है।

इसी संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन अम्बेडकरनगर जिले के युवाओं के बीच कृत्रिम बुद्धिमत्ता और रोजगार आकांक्षाओं के संबंध को समझने का प्रयास करता है।

2. अध्ययन की समस्या

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बढ़ते उपयोग ने रोजगार के स्वरूप को लेकर कई प्रश्न उत्पन्न किए हैं। क्या कृत्रिम बुद्धिमत्ता युवाओं के लिए रोजगार के अवसर बढ़ाएगी? क्या इससे पारंपरिक नौकरियों की संख्या कम होगी? क्या भविष्य में रोजगार प्राप्त करने के लिए वर्तमान

शैक्षिक योग्यता पर्याप्त होगी? क्या युवाओं को नए तकनीकी कौशल सीखने होंगे? क्या ग्रामीण और शहरी युवाओं पर इसका प्रभाव समान होगा?

इन प्रश्नों का उत्तर केवल तकनीकी दृष्टिकोण से नहीं दिया जा सकता। रोजगार एक सामाजिक संस्था है और रोजगार से जुड़ी आकांक्षाएँ सामाजिक प्रतिष्ठा, परिवार की अपेक्षाओं, आर्थिक सुरक्षा और जीवन-शैली से जुड़ी होती हैं।

अम्बेडकरनगर जैसे जिले में सरकारी नौकरी की सामाजिक प्रतिष्ठा अभी भी महत्वपूर्ण है। इसके साथ-साथ निजी क्षेत्र, व्यवसाय, स्वरोजगार और डिजिटल कार्यों के नए विकल्प भी युवाओं के सामने आ रहे हैं। इस परिस्थिति में यह जानना आवश्यक है कि युवा कृत्रिम बुद्धिमत्ता को अपने रोजगार भविष्य के संदर्भ में किस प्रकार देखते हैं।

3. अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

- अम्बेडकरनगर जिले के युवाओं में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
- युवाओं के रोजगार संबंधी दृष्टिकोण पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रभाव को समझना।
- यह जानना कि युवा कृत्रिम बुद्धिमत्ता को रोजगार के अवसर के रूप में देखते हैं या रोजगार के लिए चुनौती के रूप में।
- युवाओं में रोजगार सुरक्षा से संबंधित चिंता का अध्ययन करना।
- भविष्य के रोजगार के लिए आवश्यक कौशलों के संबंध में युवाओं की धारणा को समझना।
- ग्रामीण तथा शहरी/अर्ध-शहरी युवाओं के बीच कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रति दृष्टिकोण में अंतर को समझना।
- विभिन्न आयु समूहों के युवाओं की कृत्रिम बुद्धिमत्ता संबंधी धारणाओं का अध्ययन करना।
- युवाओं की रोजगार प्राथमिकताओं में संभावित परिवर्तन को समझना।
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा रोजगार आकांक्षा के संबंध को समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से स्पष्ट करना।

4. शोध प्रश्न

- अम्बेडकरनगर के युवा कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बारे में कितने जागरूक हैं?
- क्या युवा कृत्रिम बुद्धिमत्ता को रोजगार के अवसर के रूप में देखते हैं?
- क्या कृत्रिम बुद्धिमत्ता युवाओं में रोजगार सुरक्षा को लेकर चिंता उत्पन्न कर रही है?
- भविष्य के रोजगार के लिए युवा किन नए कौशलों को आवश्यक मानते हैं?
- क्या आयु के आधार पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रति दृष्टिकोण में अंतर दिखाई देता है?
- क्या ग्रामीण और शहरी/अर्ध-शहरी युवाओं में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रति जागरूकता अलग-अलग है?
- क्या कृत्रिम बुद्धिमत्ता युवाओं की पारंपरिक रोजगार आकांक्षाओं को प्रभावित कर रही है?

5. अनुसंधान पद्धति

5.1 अध्ययन का क्षेत्र

अध्ययन का क्षेत्र अम्बेडकरनगर जिला, उत्तर प्रदेश है। अध्ययन में जिले के ग्रामीण तथा शहरी/अर्ध-शहरी क्षेत्रों से युवाओं को शामिल किया गया। अम्बेडकरनगर की सामाजिक एवं आर्थिक संरचना में कृषि, स्थानीय व्यापार, लघु उद्योग, सेवा क्षेत्र, शिक्षा तथा विभिन्न प्रकार के असंगठित कार्य शामिल हैं। जिले में तकनीकी एवं डिजिटल संसाधनों का विस्तार युवाओं की शिक्षा तथा रोजगार संबंधी सोच को प्रभावित कर रहा है।

5.2 नमूना चयन

अध्ययन में कुल 50 युवाओं को शामिल किया गया। उत्तरदाताओं का चयन उद्देश्यपूर्ण एवं सुविधानुसार नमूना चयन के आधार पर किया गया। अध्ययन के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए ऐसे युवाओं को शामिल किया गया जो शिक्षा, रोजगार, डिजिटल माध्यम अथवा कृत्रिम बुद्धिमत्ता से संबंधित जानकारी देने की स्थिति में थे। अध्ययन का नमूना सांख्यिकीय रूप से पूरे अम्बेडकरनगर जिले के युवाओं का प्रतिनिधित्व करने का दावा नहीं करता। इसका उद्देश्य चयनित युवाओं के बीच उभरती रोजगार संबंधी प्रवृत्तियों को समझना है।

5.3 सूचना संकलन

प्राथमिक सूचनाएँ प्रश्नावली तथा प्रत्यक्ष बातचीत के माध्यम से प्राप्त की गईं। प्रश्नों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की जानकारी, रोजगार पर संभावित प्रभाव, रोजगार सुरक्षा, नए कौशलों की आवश्यकता तथा रोजगार की प्राथमिकताओं से संबंधित विषय शामिल किए गए।

5.4 उत्तरदाताओं का वितरण

तालिका 1: ग्रामीण एवं शहरी/अर्ध-शहरी उत्तरदाता

क्षेत्र	संख्या	प्रतिशत
ग्रामीण	18	36%
शहरी/अर्ध-शहरी	32	64%
कुल	50	100%

तालिका से स्पष्ट है कि अध्ययन में 36 प्रतिशत उत्तरदाता ग्रामीण क्षेत्र तथा 64 प्रतिशत उत्तरदाता शहरी अथवा अर्ध-शहरी क्षेत्र से संबंधित थे।

तालिका 2: आयु के आधार पर उत्तरदाताओं का वितरण

आयु समूह	संख्या	प्रतिशत
20-25 वर्ष	24	48%
26-30 वर्ष	15	30%
31-35 वर्ष	11	22%
कुल	50	100%

20-25 वर्ष के युवाओं की संख्या सबसे अधिक रही। यह आयु समूह सामान्यतः उच्च शिक्षा, प्रतियोगी परीक्षाओं तथा रोजगार की तैयारी से जुड़ा होता है, इसलिए इस समूह की रोजगार संबंधी आकांक्षाएँ अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण हैं।

6. संबंधित साहित्य की समीक्षा

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और रोजगार के संबंध में उपलब्ध साहित्य यह संकेत करता है कि तकनीकी परिवर्तन का प्रभाव केवल रोजगारों की संख्या पर नहीं पड़ता, बल्कि कार्य की प्रकृति, आवश्यक कौशल और संगठनात्मक संरचना पर भी पड़ता है।

जराही ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मानव के बीच सहयोग की संभावना पर बल देते हुए बताया कि अनेक कार्यों में तकनीक मानव निर्णय क्षमता का स्थान लेने के बजाय उसे मजबूत कर सकती है। इससे यह विचार सामने आता है कि भविष्य का कार्यस्थल मानव और तकनीक के संयुक्त कार्य पर आधारित हो सकता है।

अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के 2024 के अध्ययन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के कारण रोजगारों पर पड़ने वाले प्रभाव को कार्यों की प्रकृति और मानव-तकनीक पूरकता के संदर्भ में देखा गया है। अध्ययन यह संकेत देता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव विभिन्न देशों, क्षेत्रों और व्यवसायों में समान नहीं होगा।

भारत के संदर्भ में युवा कार्यबल की रोजगार-योग्यता पर किए गए अध्ययनों में शिक्षा और रोजगार बाजार के बीच कौशल संबंधी अंतर को महत्वपूर्ण समस्या के रूप में देखा गया है। इसका अर्थ है कि केवल शैक्षिक प्रमाण-पत्र रोजगार प्राप्त करने के लिए पर्याप्त नहीं

हो सकतेय रोजगार बाजार की बदलती आवश्यकताओं के अनुरूप कौशल का विकास भी आवश्यक है।

भारत में स्वचालन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर किए गए हालिया अध्ययनों में रोजगार विस्थापन, कौशल-असंगति, आय असमानता तथा असंगठित क्षेत्र पर संभावित प्रभावों की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है। वहीं कुछ अध्ययनों में यह भी कहा गया है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता नए प्रकार के कार्यों और उत्पादकता में वृद्धि के अवसर पैदा कर सकती है।

हाल के भारतीय अध्ययनों में रोजगारों को मानवीय कार्य की प्रधानता, तकनीक द्वारा सहायता प्राप्त कार्य तथा अधिक स्वचालित किए जा सकने वाले कार्यों के रूप में देखने का प्रयास किया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव सभी व्यवसायों पर एक जैसा नहीं है।

उपलब्ध साहित्य से यह भी स्पष्ट है कि भारत में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव क्षेत्र, शिक्षा, कौशल, लिंग, ग्रामीण-शहरी स्थिति और आर्थिक संरचना के आधार पर अलग-अलग हो सकता है। प्रस्तुत अध्ययन इसी व्यापक संदर्भ को अम्बेडकरनगर के युवाओं के स्तर पर समझने का प्रयास करता है।

7. युवाओं में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रति जागरूकता

अध्ययन में शामिल युवाओं के उत्तरों से पता चलता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता अब केवल तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले युवाओं तक सीमित विषय नहीं है। शिक्षा, मोबाइल फोन, इंटरनेट, सामाजिक माध्यमों और डिजिटल सेवाओं के माध्यम से युवा इसके विभिन्न रूपों से परिचित हो रहे हैं।

शहरी और अर्ध-शहरी युवाओं में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रति जागरूकता अपेक्षाकृत अधिक दिखाई दी। इसका संबंध इंटरनेट, डिजिटल उपकरणों तथा ऑनलाइन सेवाओं तक अधिक सहज पहुँच से जोड़ा जा सकता है।

ग्रामीण युवाओं में भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता को लेकर जागरूकता मौजूद है, लेकिन इसकी प्रकृति अधिकतर सामान्य जानकारी और डिजिटल माध्यमों तक सीमित दिखाई देती है। इससे ग्रामीण-शहरी डिजिटल अंतर की ओर संकेत मिलता है।

8. कृत्रिम बुद्धिमत्ता और रोजगार के अवसर

अध्ययन का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि युवाओं का एक बड़ा हिस्सा कृत्रिम बुद्धिमत्ता को केवल रोजगार समाप्त करने वाली तकनीक नहीं मानता।

लगभग 68 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता नए रोजगार अवसर पैदा कर सकती है। इसका अर्थ है कि युवा तकनीकी परिवर्तन में रोजगार की संभावनाएँ भी देख रहे हैं।

नए रोजगार के संभावित क्षेत्रों में डिजिटल सेवाएँ, तकनीकी सहायता, सामग्री निर्माण, ऑकड़ा आधारित कार्य, ऑनलाइन व्यवसाय तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता से संबंधित नई सेवाएँ शामिल हो सकती हैं।

हालाँकि युवाओं की यह धारणा इस बात पर भी निर्भर करती है कि वे स्वयं इन नए अवसरों तक पहुँचने के लिए आवश्यक शिक्षा और कौशल प्राप्त कर पाते हैं या नहीं।

इस प्रकार युवाओं की दृष्टि में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का स्वरूप द्वंद्वात्मक है—एक ओर अवसर, दूसरी ओर चुनौती।

9. रोजगार सुरक्षा की चिंता

कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जुड़े अवसरों के साथ रोजगार सुरक्षा का प्रश्न भी महत्वपूर्ण रूप से सामने आया।

लगभग 70 प्रतिशत युवाओं ने रोजगार की सुरक्षा को लेकर चिंता व्यक्त की। यह चिंता इस धारणा से जुड़ी हो सकती है कि यदि मशीनें कुछ कार्यों को मनुष्यों की तुलना में तेजी और कम लागत पर करने लगेंगी, तो कुछ प्रकार के रोजगारों की मांग कम हो सकती है।

रोजगार सुरक्षा की चिंता विशेष रूप से उन युवाओं के लिए महत्वपूर्ण है जिनके लिए स्थायी आय, सामाजिक प्रतिष्ठा और पारिवारिक आर्थिक सुरक्षा प्रमुख प्राथमिकताएँ हैं।

यहाँ सरकारी नौकरी की प्राथमिकता को भी समझा जा सकता है। सरकारी रोजगार को सामान्यतः स्थायित्व, नियमित आय तथा सामाजिक सुरक्षा से जोड़ा जाता है। इसलिए तकनीकी परिवर्तन के दौर में सरकारी नौकरी की आकांक्षा का बने रहना रोजगार सुरक्षा की सामाजिक आवश्यकता को भी दर्शाता है।

10. भविष्य के रोजगार के लिए कौशल की आवश्यकता

अध्ययन में लगभग 74 प्रतिशत युवाओं ने माना कि भविष्य में रोजगार प्राप्त करने के लिए नए कौशल सीखना आवश्यक होगा।

यह परिणाम महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे पता चलता है कि युवा स्वयं भी यह महसूस कर रहे हैं कि रोजगार बाजार स्थिर नहीं है। केवल पारंपरिक शैक्षिक योग्यता के आधार पर भविष्य में रोजगार प्राप्त करना पर्याप्त नहीं हो सकता।

भविष्य में तकनीकी समझ, डिजिटल साक्षरता, समस्या समाधान, संचार कौशल, रचनात्मकता और बदलती तकनीक के साथ सीखने की क्षमता महत्वपूर्ण हो सकती है।

यहाँ शिक्षा संस्थानों की भूमिका भी महत्वपूर्ण हो जाती है। उच्च शिक्षा संस्थानों को केवल पाठ्यक्रम पूरा करने तक सीमित न रहकर विद्यार्थियों को बदलते रोजगार बाजार की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार करना होगा।

11. आयु और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रति दृष्टिकोण

अध्ययन में आयु समूहों के आधार पर दृष्टिकोण में अंतर दिखाई दिया।

20-25 वर्ष के युवा कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रति अपेक्षाकृत अधिक सकारात्मक दिखाई दिए। इस आयु वर्ग के युवा सामान्यतः डिजिटल माध्यमों के अधिक संपर्क में रहते हैं और नई तकनीकों को सीखने के प्रति अधिक खुले दिखाई देते हैं।

26-30 वर्ष के युवाओं के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रश्न शिक्षा से रोजगार में प्रवेश और रोजगार में स्थायित्व से अधिक जुड़ा हुआ दिखाई देता है।

31-35 वर्ष के युवाओं के संदर्भ में रोजगार सुरक्षा तथा वर्तमान रोजगार की स्थिरता का महत्व अधिक दिखाई देता है।

इस प्रकार आयु केवल जैविक विशेषता नहीं है, बल्कि व्यक्ति के जीवन-चक्र और रोजगार की स्थिति से जुड़ी सामाजिक परिस्थिति भी है। इसी कारण अलग-अलग आयु समूह तकनीकी परिवर्तन को अलग दृष्टि से देख सकते हैं।

12. ग्रामीण और शहरी/अर्ध-शहरी अंतर

ग्रामीण और शहरी/अर्ध-शहरी युवाओं के बीच कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रति जागरूकता और उपयोग में अंतर दिखाई देता है।

शहरी एवं अर्ध-शहरी युवाओं को इंटरनेट, डिजिटल सेवाओं, ऑनलाइन शिक्षा तथा तकनीकी उपकरणों तक अपेक्षाकृत अधिक पहुँच प्राप्त है। इसके कारण वे कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विभिन्न उपयोगों से जल्दी परिचित हो सकते हैं।

ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं के सामने इंटरनेट की गुणवत्ता, डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता, प्रशिक्षण तथा आर्थिक संसाधनों से संबंधित बाधाएँ हो सकती हैं।

यदि कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित अर्थव्यवस्था का विस्तार होता है, तो यह आवश्यक होगा कि ग्रामीण युवाओं को भी समान डिजिटल एवं कौशल अवसर प्राप्त हों। अन्यथा तकनीकी परिवर्तन रोजगार के अवसरों में नई असमानताएँ पैदा कर सकता है।

13. युवाओं की रोजगार प्राथमिकताएँ

तालिका 3: रोजगार की प्राथमिकताएँ

रोजगार का विकल्प	उत्तरदाता	प्रतिशत
सरकारी नौकरी	22	44%
निजी क्षेत्र	10	20%
स्वरोजगार/व्यवसाय	8	16%
डिजिटल/ऑनलाइन कार्य	6	12%
अन्य	4	8%
कुल	50	100%

तालिका से स्पष्ट है कि सरकारी नौकरी 44 प्रतिशत उत्तरदाताओं के साथ सबसे प्रमुख रोजगार प्राथमिकता रही। निजी क्षेत्र को 20 प्रतिशत युवाओं ने चुना। 16 प्रतिशत युवाओं ने स्वरोजगार अथवा व्यवसाय को प्राथमिकता दी।

डिजिटल अथवा ऑनलाइन कार्य को 12 प्रतिशत युवाओं ने चुना। इससे संकेत मिलता है कि रोजगार की पारंपरिक आकांक्षाओं के साथ नए डिजिटल रोजगार विकल्प भी युवाओं की सोच में स्थान बना रहे हैं।

फिर भी सरकारी नौकरी की प्राथमिकता यह बताती है कि तकनीकी परिवर्तन के बावजूद रोजगार की स्थिरता, सामाजिक प्रतिष्ठा और आर्थिक सुरक्षा युवाओं की आकांक्षाओं में महत्वपूर्ण बनी हुई है।

14. कृत्रिम बुद्धिमत्ता और रोजगार आकांक्षा का समाजशास्त्रीय पक्ष

रोजगार आकांक्षा को केवल व्यक्ति की व्यक्तिगत इच्छा मानना समाजशास्त्रीय रूप से पर्याप्त नहीं होगा। आकांक्षाएँ सामाजिक परिस्थितियों में निर्मित होती हैं।

अम्बेडकरनगर के संदर्भ में सरकारी नौकरी की मजबूत आकांक्षा को परिवार, सामाजिक प्रतिष्ठा, नियमित आय और रोजगार सुरक्षा से जोड़कर समझा जा सकता है। ग्रामीण एवं छोटे शहरों में सरकारी सेवा का सामाजिक महत्व अभी भी व्यापक है।

दूसरी ओर डिजिटल माध्यमों का विस्तार युवाओं के सामने रोजगार की नई कल्पना प्रस्तुत कर रहा है। अब रोजगार का अर्थ केवल किसी कार्यालय या संस्थान में नियमित नौकरी करना नहीं रह गया है। ऑनलाइन कार्य, डिजिटल सेवाएँ, स्वतंत्र कार्य तथा इंटरनेट आधारित व्यवसाय भी रोजगार के विकल्प बन रहे हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता इस परिवर्तन को और तेज कर सकती है। इससे रोजगार आकांक्षाओं का स्वरूप अधिक विविध हो सकता है। हालांकि इस परिवर्तन का लाभ उन्हीं युवाओं को अधिक मिल सकता है जिनके पास आवश्यक तकनीकी संसाधन और कौशल उपलब्ध हों।

15. कृत्रिम बुद्धिमत्ता और रोजगार सुरक्षा का प्रश्न

कृत्रिम बुद्धिमत्ता से संबंधित युवाओं की चिंता को रोजगार सुरक्षा के व्यापक सामाजिक संदर्भ में समझना आवश्यक है।

जब युवा किसी रोजगार को चुनता है तो वह केवल वेतन को नहीं देखता। वह रोजगार की स्थिरता, भविष्य की आय, सामाजिक सम्मान और परिवार की आर्थिक सुरक्षा को भी ध्यान में रखता है।

इसी कारण एक ओर युवा कृत्रिम बुद्धिमत्ता से नए रोजगार पैदा होने की संभावना स्वीकार करते हैं और दूसरी ओर रोजगार समाप्त होने की आशंका भी व्यक्त करते हैं।

यह विरोधाभास वास्तव में विरोधाभास नहीं, बल्कि बदलते रोजगार बाजार के प्रति युवाओं की यथार्थवादी प्रतिक्रिया है। वे तकनीकी परिवर्तन के अवसरों को समझते हैं, लेकिन यह भी जानते हैं कि सभी लोग समान गति से नए कौशल नहीं सीख पाएँगे।

16. शिक्षा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विस्तार के साथ शिक्षा व्यवस्था के सामने भी नई चुनौतियाँ हैं।

यदि रोजगार की आवश्यकताएँ बदल रही हैं तो उच्च शिक्षा संस्थानों को भी विद्यार्थियों को केवल परीक्षा और प्रमाण-पत्र के लिए तैयार करने के बजाय बदलते रोजगार बाजार के लिए तैयार करना होगा। समाजशास्त्र जैसे विषयों में भी तकनीकी परिवर्तन का अध्ययन महत्वपूर्ण हो गया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव श्रम-विभाजन, सामाजिक स्तरीकरण, असमानता, कार्य संस्कृति, संगठन, शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन जैसे विषयों से सीधे जुड़ा है।

युवाओं को तकनीकी कौशल के साथ-साथ आलोचनात्मक चिंतन, सामाजिक समझ, संचार क्षमता और समस्या समाधान की क्षमता विकसित करने की आवश्यकता होगी।

17. अम्बेडकरनगर के संदर्भ में अध्ययन का महत्व

अम्बेडकरनगर में युवाओं की रोजगार आकांक्षाएँ स्थानीय सामाजिक-आर्थिक संरचना से जुड़ी हैं। कृषि एवं स्थानीय व्यवसायों के साथ सेवा क्षेत्र और सरकारी रोजगार की आकांक्षा महत्वपूर्ण है। जिले के युवाओं के लिए तकनीकी परिवर्तन का प्रभाव समान नहीं होगा। जिन युवाओं के पास अच्छी इंटरनेट सुविधा, कंप्यूटर, स्मार्टफोन, अंग्रेजी अथवा तकनीकी ज्ञान और प्रशिक्षण की सुविधा है, उनके लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जुड़े अवसरों तक पहुँचना अपेक्षाकृत आसान हो सकता है।

दूसरी ओर सीमित संसाधनों वाले युवाओं के लिए यही परिवर्तन रोजगार संबंधी नई चुनौती पैदा कर सकता है।

इसलिए अम्बेडकरनगर में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का अध्ययन केवल तकनीकी विषय नहीं, बल्कि सामाजिक असमानता और अवसरों के वितरण का प्रश्न भी है।

18. प्रमुख निष्कर्ष

अध्ययन से निम्नलिखित प्रमुख निष्कर्ष सामने आए—

- अध्ययन में शामिल अधिकांश युवा कृत्रिम बुद्धिमत्ता से परिचित हैं और इसे भविष्य के रोजगार से संबंधित विषय मानते हैं।
- लगभग 68 प्रतिशत युवाओं ने माना कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता नए रोजगार अवसर पैदा कर सकती है।
- लगभग 70 प्रतिशत युवाओं ने रोजगार सुरक्षा को लेकर चिंता व्यक्त की।
- लगभग 74 प्रतिशत युवाओं ने माना कि भविष्य के रोजगार के लिए नए कौशल सीखना आवश्यक होगा।
- 20-25 वर्ष के युवा कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रति अपेक्षाकृत अधिक सकारात्मक दिखाई दिए।
- शहरी एवं अर्ध-शहरी युवाओं में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रति जागरूकता और उपयोग ग्रामीण युवाओं की अपेक्षा अधिक दिखाई दिया।
- सरकारी नौकरी 44 प्रतिशत उत्तरदाताओं के साथ सबसे प्रमुख रोजगार प्राथमिकता रही।
- निजी क्षेत्र, स्वरोजगार तथा डिजिटल कार्य भी युवाओं की रोजगार आकांक्षाओं में स्थान बना रहे हैं।
- युवा कृत्रिम बुद्धिमत्ता को केवल रोजगार समाप्त करने वाली तकनीक के रूप में नहीं देखते।
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता के संदर्भ में अवसर और रोजगार असुरक्षा दोनों की धारणा एक साथ मौजूद है।
- भविष्य में रोजगार प्राप्त करने की क्षमता तकनीकी ज्ञान और नए कौशल सीखने की क्षमता से अधिक जुड़ सकती है।
- ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच डिजिटल संसाधनों की असमानता भविष्य में रोजगार के अवसरों की असमानता को प्रभावित कर सकती है।

19. निष्कर्ष

कृत्रिम बुद्धिमत्ता वर्तमान समय में केवल तकनीकी परिवर्तन का विषय नहीं रह गई है। यह युवाओं की शिक्षा, कौशल, रोजगार और भविष्य की आकांक्षाओं को प्रभावित करने वाली सामाजिक शक्ति के रूप में सामने आ रही है।

अम्बेडकरनगर के चयनित 50 युवाओं के अध्ययन से पता चलता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रति युवाओं का दृष्टिकोण एकांगी नहीं है। वे इसके माध्यम से नए रोजगार अवसरों की संभावना देखते हैं, लेकिन साथ ही रोजगार की सुरक्षा को लेकर चिंता भी व्यक्त करते हैं।

अध्ययन का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि सरकारी नौकरी अभी भी युवाओं की प्रमुख रोजगार आकांक्षा बनी हुई है। 44 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा सरकारी नौकरी को प्राथमिकता देना बताया है कि स्थिरता और सामाजिक सुरक्षा का महत्व तकनीकी परिवर्तन के दौर में भी कम नहीं हुआ है। साथ ही निजी रोजगार, स्वरोजगार तथा डिजिटल कार्यों की ओर बढ़ती रुचि यह संकेत देती है कि रोजगार की कल्पना धीरे-धीरे अधिक विविध हो रही है।

लगभग 74 प्रतिशत युवाओं द्वारा नए कौशलों की आवश्यकता को स्वीकार करना भविष्य के रोजगार बाजार में कौशल की बढ़ती भूमिका को स्पष्ट करता है। इसका अर्थ है कि रोजगार का प्रश्न केवल उपलब्ध नौकरियों की संख्या का प्रश्न नहीं रहेगा, बल्कि यह भी महत्वपूर्ण होगा कि युवा बदलती कार्य-प्रणाली के अनुरूप स्वयं को कितना तैयार कर पाते हैं।

ग्रामीण और शहरीधार्मिक-शहरी युवाओं के बीच जागरूकता तथा उपयोग में दिखाई देने वाला अंतर यह संकेत देता है कि तकनीकी परिवर्तन के लाभ समान रूप से वितरित नहीं होते। यदि डिजिटल संसाधनों और कौशल प्रशिक्षण की पहुँच असमान रही तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता रोजगार संबंधी नई सामाजिक असमानताओं को जन्म दे सकती है।

इस प्रकार कृत्रिम बुद्धिमत्ता को युवाओं के रोजगार भविष्य के संदर्भ में न तो केवल खतरे के रूप में देखा जा सकता है और न ही केवल अवसर के रूप में। इसका वास्तविक प्रभाव इस बात पर निर्भर करेगा कि शिक्षा व्यवस्था, कौशल विकास, रोजगार नीतियाँ और सामाजिक संस्थाएँ युवाओं को बदलते कार्य संसार के लिए किस प्रकार तैयार करती हैं।

20. अध्ययन की सीमाएँ

प्रस्तुत अध्ययन की कुछ सीमाएँ हैं। प्रथम, अध्ययन में केवल 50 उत्तरदाताओं को शामिल किया गया है। इसलिए प्राप्त निष्कर्षों को अम्बेडकरनगर जिले के सभी युवाओं पर सीधे लागू नहीं किया जा सकता।

द्वितीय, उत्तरदाताओं का चयन उद्देश्यपूर्ण एवं सुविधानुसार नमूना चयन के आधार पर किया गया है। इसलिए यह अध्ययन सांख्यिकीय प्रतिनिधित्व का दावा नहीं करता।

तृतीय, अध्ययन में महिला उत्तरदाताओं का पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं हो सका। इसलिए लैंगिक आधार पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता और रोजगार आकांक्षाओं की तुलना नहीं की गई है। इसे अध्ययन की सीमा के रूप में स्वीकार किया गया है।

चतुर्थ, कृत्रिम बुद्धिमत्ता का क्षेत्र तेजी से बदल रहा है। इसलिए भविष्य में युवाओं की धारणाओं और रोजगार अवसरों में परिवर्तन संभव है।

संदर्भ सूची

- जराही मोहम्मद हुसैन। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और कार्य का भविष्यरू संगठनात्मक निर्णय-निर्माण में मानव-कृत्रिम बुद्धिमत्ता की सहजीविता। बिजनेस होराइजन्स. 2018;61(4):577-586. DOI: 10-1016/j.bushor.2018.03.007

- कज्जानिगा माउरो एवं अन्य। जनरेटिव कृत्रिम बुद्धिमत्ता: कृत्रिम बुद्धिमत्ता और कार्य का भविष्य। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष, कर्मचारी चर्चा पत्र, 2024.
- श्रानाइडर सेबास्टियन, पिल्ज माथियास। भारत की श्रम-बाजार चुनौतियाँ: आपूर्ति और मांग के दृष्टिकोण से युवा कार्यबल की रोजगार-योग्यता। प्रॉस्पेक्ट्स. 2024;54:687-708. DOI: 10-1007/s11125-024-09691-y
- बेहेरा मिनकेतन, निगम सौरव। भारत में स्वचालन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और श्रम बाजार: चुनौतियाँ और आगे की राह, 2025।
- महाजन कनिका एवं अन्य। भारत में रोजगार का संक्रमण: कौशल, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और कार्य का भविष्य, 2026।
- मलिक पी., जैन एन. भारत के श्रम बाजार के साथ कृत्रिम बुद्धिमत्ता की अंतःक्रिया: उत्पादकता, समावेशिता और उद्यमिता के आधार पर श्रम-केंद्रित कृत्रिम बुद्धिमत्ता मॉडल, 2026।
- अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय। भारत में कार्य की स्थिति 2026: श्रम बाजार में युवा-शिक्षा से रोजगार तक की यात्रा, 2026।